अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Informal objective Tests)

प्रमापीकृत एवं अध्यापक - निर्मित दोनों प्रकार के परीक्षणों में विषय - वस्तु के निर्धारण में एक ही प्रकार के सामान्य सिद्धान्तों का उपयोग होता है। दोनों ही प्रकार के परीक्षणों में काफी प्रश्न-पद किये जा सकते है, ताकि व्यापक मापन सम्भव हो सके। अध्यापक-निर्मित अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ परीक्षणों एवं निबंधात्मक परीक्षणों में निस्सन्देह अन्तर है। अध्यापक - निर्मित परीक्षण निबंधात्मक परीक्षाओं के दोषों से मुक्त है। इसमें अध्यापक न्यायदर्श का लिया जाना सम्भव है। अतः इनके आधार पर प्राप्त परिणाम काफी विश्वसनीय होते हैं। इन परीक्षणों में अंकीकरण भी वस्तुनिष्ठ होता है। प्रश्न - पद ऐसे बनाये जाते है कि उनके उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त हो। अनौपचारिक परीक्षणों में भी प्रमापीकृत परीक्षणों की भाँति समय की बचत होती है क्योंकि प्रश्नों के उत्तर निश्चित होते हैं।

अनौपचारिक परीक्षणों की रचना (Construction of Informal objective Tests) →

अनौपचारिक परीक्षणों की रचना करते समय सर्वप्रथम परीक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करते है। इससे विषय - वस्तु के विभिन्न भागों में सन्तुलन कायम रहता है। परीक्षण का उद्देश्य अन्ततः व्यवहार में परिवर्तन है। यह परिवर्तन कई प्रकार से हो

Scanned with CamScanner

सकता है - दक्षता, ज्ञान, समझ, प्रत्यय आदि विधायी शिक्षा के परिणामों का तार्किक चिन्तन एवं समस्या के सुलझाने में प्रयोग करें। उद्देश्यों का निर्धारण करने के पश्चात् विषय-वस्तु का विश्लेषण करके प्रश्न लिखने चाहिए। पदों के चुनाव में यह ध्यान रखना चाहिए कि न्यादर्श व्यापक हो। एक ही परीक्षण में अनेक प्रकार के पद रखने चाहिए - छोटे परीक्षणों में दो-तीन प्रकार के पद एवं बड़े परीक्षण में चार, पाँच प्रकार के पद रखने चाहिए।

Scanned with CamScanner

Date
Page

शिक्षक निर्मित परीक्षण (Teacher-Made Tests) →

(1) आत्मनिष्ठ परीक्षण (Subjective Tests) → ये शिक्षक द्वारा निर्मित ऐसी परीक्षाएँ हैं जिनके अंकन पर अध्यापक के मनोभावों का प्रभाव पड़ता है। ये दो प्रकार के होते है-

(A) मौखिक परीक्षण (Oral Tests) → मौखिक परीक्षण में किसी प्रकार के लिखने आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती है। परीक्षक छात्रों से प्रश्न पूछता है और छात्र भी मौखिक उत्तर देते हैं। इस प्रकार के परीक्षणों के अंकों में वस्तुनिष्ठता का अभाव रहता है।

(B) निबंधात्मक परीक्षण (Essay Type Tests) → इस प्रकार के परीक्षण में उत्तर निबंध के रूप में लिखना पड़ता है। इन परीक्षणों के प्रश्न प्राय: अस्पष्ट होते हैं। इन उत्तरों पर अंक देने में वस्तुनिष्ठता का अभाव रहता है।

गुण (Merits) →

(i) निबंधात्मक प्रश्नों की रचना सरल होती है।
(ii) छात्रों की कल्पना तथा स्मरण शक्ति का विकास होता है।
(iii) भाषा पर छात्रों का अधिकार बढ़ता है।
(iv) विचार अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होता है।
(v) छात्रों को हस्तलेख सुन्दर बनाने का अवसर प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

दोष (Demerits) →

① यह विषय की व्यापक परीक्षा नहीं है।
② बालकों में अस्वाभाविक योग्यता का मापन नहीं होता है।
③ छात्र की वास्तविक योग्यता का मापन नहीं होता है।
④ अंक देने में अध्यापक के मनोभावों का प्रभाव पड़ता है।

② वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Objective Tests) → निबंधात्मक परीक्षणों के दोषों को दूर करने के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का विकास किया गया है।

गुण (Merits) →

(i) इनका क्षेत्र विस्तृत होता है।
(ii) इन परीक्षणों का मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ होता है। परीक्षक के विचारों का अंक देते समय कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(iii) स्कोरिंग की होने के कारण अंक देने में परीक्षक को कोई कठिनाई नहीं होती है।
(iv) प्रश्नों की संख्या इतनी अधिक होती है कि छात्र को नकल करने का अवसर प्राप्त नहीं होता है।
(v) ये परीक्षण बालकों को पूरा पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए प्रेरित करता है।

Scanned with CamScanner

Date
Page

दोष (Demerits) →

(i) इनके निर्माण में अधिक समय लगता है।
(ii) प्रश्नों का निर्माण सरल कार्य नहीं है।
(iii) छात्र भाषा पर अधिकार नहीं कर पाते है।
(iv) छात्रों में भाषा तथा कल्पना शक्ति का विकास नहीं हो पाता है।
(v) छात्रों में अनुमान लगाकर उत्तर देने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

Scanned with CamScanner